एक आस्ट्रियाई नर्तकी के बारे में एक बात पढ़ी थी। वह बहुत लोकप्रिय थी और उसके नृत्य-संगीतों के कार्यक्रम इतने सफल होते कि टिकटघर में रुपयों के ढेर लग जाते। युरोप, अमेरिका – जहाँ-जहाँ भी उसने प्रवास किया, समाचारपत्रों में उसकी प्रशंसा की झड़ियाँ लग जाती थीं तथा उसके कार्यक्रमों को देखने के लिए बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सरदार, करोड़पति, लेखक, छायाकार, श्रमजीवी मजदूर आते। क्या, टूट पड़ते। उसकी अपूर्व सफलता देखकरसब लोग दंग रह जाते। एक लेखक ने, जो उसकी जीवनी लिख रहा था, उससे उसकी इस अलौकिक सफलता का रहस्य पूछा। उसने बताया, “जब रंगमंच पर जाने का श्रण आता है, तब उसके पहले मैं अपने निजी कमरें में घुटने टेकर भगवान से विनयपूर्वक प्रार्थना करती हूँ कि जिन दर्शकों के सामने मैं जाने वाली हँ, वे मेरे अन्नदाता हैं। मुझे शक्ति दो, जिससे उनमें किसी को भी यह न लगे कि उनके पैसे मूल्य नहीं मिला। उनका परम संतोष हो, यही मेरा ध्येय रहता है।

इस नर्तकी ने यथार्थ में एक बहुत बड़ा सत्य जान लिया, यह मानना होगा। मानो वह सफलता की कुंजी ही पा गई हो।